पा की फ़सल

एफ्रम कैरियर द्वारा
यान एन्ड्रूस् को सुनाई सच्ची कहानी



लेखन: यान एन्ड्रूस्

चित्र: सिबली यंग

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

पा एक किसान हैं। समय मुश्किलों से भरा रहा है, पर इस साल बेहतरी की उम्मीद है। आलुओं के पौधे अच्छे से पनप रहे हैं। जब बरसात होनी चाहिए पानी बरसा है, सूरज भी ताप दे रहा है। परिवार शायद इस साल पहली बार तोहफ़ों के साथ क्रिसमस मना सकेगा।

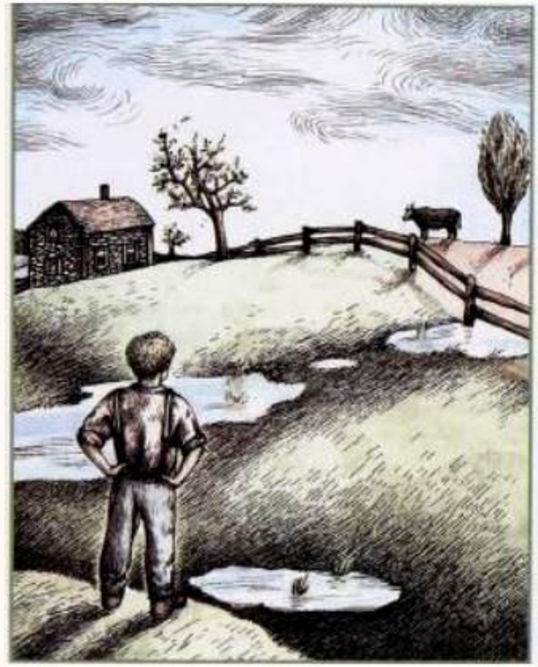
नन्हा एफी खेत में पा की मदद करता है और फ़सल को हरेक कदम पर पनपते देखता है। फ़सल को इकट्ठा करने का समय आता है। एफी घोड़ागाड़ी में आलू लादने में पा की मदद करता है। और बाद में पा को खुश-खुश उन्हें बेचने जाते देखता है। पर रात को जब पा लौटते हैं, गाड़ी खाली नहीं, भरी हुई है। इस साल सभी किसानों को आलुओं की भरपूर फ़सल मिली है, सो अब ख़रीददार ही नहीं हैं।

आलू अगली बसन्त तक के लिए तहख़ाने में रखे जाते हैं। और पा परिवार का गुज़ारा चलाने के लिए जंगलों में लट्ठे काटने जाने पर मजबूर होते हैं। बसन्त में जब पा लौटते हैं, पता चलता है कि सारे आलू सड़ चुके हैं। एफी और उसके पिता अपनी उम्मीद को निराशा में बदलते देखते हैं।

महामन्दी के दौर का यह किस्सा एक ऐसे परिवार की सच्ची कहानी है जो पूरी तरह कंगाल और मायूस हो चुका है। क़िताब के चित्र उस दौर को सजीव करते हैं जिसमें लोग भयानक हालातों में जी रहे थे। आज एफ्रम अपना अधिकतर समय विकासशली मुल्क़ों में विकास परियोजनाओं पर काम करते बिताते हैं। पर दुनिया में कई लोग आज भी ठीक ऐसी ही मुश्किलों का सामना करते हैं जिन्हें कुछ भी नहीं बदल पाता।

यान एन्ड्रूस् एक किस्सागो हैं। उन्होंने कई किताबें लिखी हैं, जिनमें एक लोकप्रिय चित्रकथा *वैरी लास्ट फर्स्ट टाइम* और उनका उपन्यास *कैरी* शामिल हैं। वे औटोवा के पास एक झील के किनारे रहती हैं।

सिबली यंग एक पुरस्कृत युवा चित्रकार हैं, जो अक्सर मिनियेचर्स पर काम करती हैं। यह पहली किताब है जिसमें उन्होंने अपने चित्रों से जान भरी है। वे टोरोन्टो में रहती हैं।



पा ने अपनी फ़सल बसन्त में बोई थी। मैं तब बहुत छोटा ही था। पर यह ज़रूर जानता था कि बर्फ़ पिघल कर छोटे-छोटे गड्ढे-ताल बना रही है। माँ हमेशा मुझे उनमें न कूदने की, उनसे बाहर रहने की हिदायत देती थी।

पा ने कहा कि उन्हें आलुओं की फ़सल के काम की शुरुआत कर देनी चाहिए। वे मुझे भी अपने साथ बाहर ले गए। मुझे एक चाकू थमाया। उन्होंने मुझे सावधानी बरतने की हिदायत तक नहीं दी!

मैं उनके पास बैठा और काम करने लगा। मैं अपने सस्पैन्डर्स (पतलून जगह पर रखने के फीते) पहने था जो टायर के अन्दर वाली ट्यूब से बने थे। मैं कभी-कभार उन्हें खींच कर फटाक से छोड़ देता था, ठीक उसी तरह जैसे पा करते थे।

हमें आलुओं को आधे और तब चौथाई हिस्सों में काटना था। यह ध्यान रखते हुए कि हरेक हिस्से में कम से कम एक जड़ की सफ़ेद गांठ हो, जिसे आँख कहते हैं।

''अगर आँख काट दोगे तो बेचारों को नीचे धरती में कुछ दिखेगा ही नहीं,'' पा ने कहा।

''क्या वे सच में देख सकते हैं?'' मैंने जानना चाहा।



अगले दिन मेरा स्कूल था। सो मैं पा की मदद वहाँ से लौट, कुछ नाश्ता करके ही कर सकता था। तब, जब मैं अपने दूसरे काम भी निपटा लेता - लकड़ी के डब्बे में



लकड़ी रखना, पानी लाना, रात के लिए किरासन की लालटेनें तैयार करना। मेरे भाई यह सब करने के लिए बहुत छोटे थे।

कई दिन गुज़रे। आलुओं के टुकड़े काटने का काम पूरा हुआ। अब वे बोए जाने के लिए तैयार थे। पा मुझे अपने साथ खेत को देखने ले गए।

“तुम्हें क्या लगता है, क्या ज़मीन जुताई के लिए सूख चुकी है?” उन्होंने मुझसे पूछा।

वे तब तक रुके जब तक मैंने अपना सिर हाँ में न हिला दिया।

अगली सुबह उन्होंने हमारे घोड़ों किंग और बिल को हल से जोता। तब उन्होंने खेत में हल से रेखाएं बनाईं। जब भी हो पाता मैं उनके पीछे-पीछे चलता। जुतने के बाद निकली माटी की गंध कितनी अच्छी थी। जब जुताई पूरी हो चुकी तब पा ने हेंगा लिया और उसे खेत में फेरा, ताकि माटी के बड़े-बड़े ढेले टूट जाएं।



“क्या लगता है, क्या खेत बुवाई के लिए तैयार हैं?” उन्होंने पूछा।

मैंने झुक कर माटी को ध्यान से देखा। तब अपना सिर फिर से हाँ में हिलाया।



पा ने बुवाई मशीन से खेत में बनी हल-रेखाओं में आलू के टुकड़े बोने शुरू कर दिए। एक टुकड़ा, कुछ खाली जगह, तब दूसरा टुकड़ा।

उस रात अपने भाइयों के साथ मैं रसोई में बिछे अपने बिस्तर पर लेटा था। मैंने पा को माँ को यह बताते सुना कि उन्होंने खाद ख़रीद ली है। कि वह बड़े ही काम की चीज़ है, अलबत्ता महंगी ज़रूर है।

पा मुझे कहते कि आलू के पौधे कभी भी फूट कर दिख सकते हैं। मैं धीरज धरने की कोशिश करता। पर सच तो यह है कि पा भी सब्र नहीं कर पा रहे थे। हर सुबह स्कूल से पहले वे मुझे खेत पर ले जाते। मैं नीचे झुकता। अपनी आँखें धरती के बिलकुल पास ले जाता, जैसे उन्होंने बताया था।

“लो, वे नज़र आने लगे!” एक दिन पा बोले।

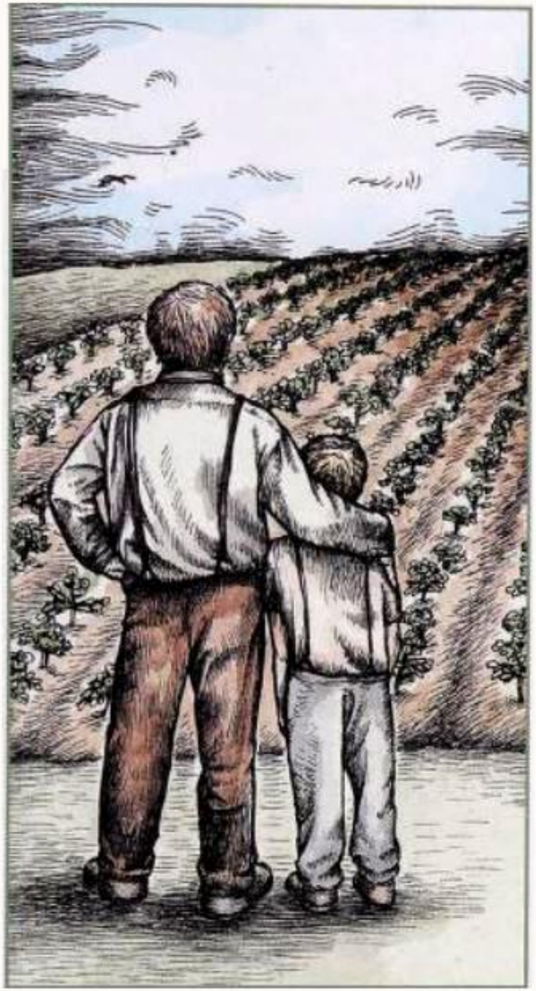
मैंने भी धरती फाड़ कर निकले नन्हें हरे-हरे अंकुरों को देखा। मैंने घर जा माँ को ख़बर दी।



जैसे-जैसे दिन गर्म होते गए अंकुर डंठलों में बदले, तब उन पर पत्तियाँ आईं। पा को खेत पर तमाम दूसरे काम भी करने पड़ते थे - सूअरों, गायों, घोड़ों और मुर्गियों के कारण। पर हम फिर भी हर दिन आलुओं को देखने ज़रूर जाते।

एक दिन उन पौधों पर सफ़ेद फूल नज़र आए।

पा जोश में आकर अपने हाथ मलने लगे। "यह अब तक की सबसे बढ़िया फ़सल होगी।" उन्होंने अपना हाथ मेरे कंधों के गिर्द रखा और उन्हें भींचा। कक्षा की पहली कतार में बैठे उस पूरी सुबह मुझे उनका वह भींचना महसूस होता रहा।





स्कूल का सत्र खत्म हुआ। पा ने आलुओं के पौधों की कतारों पर मिट्टी चढ़ाई, और खरपतवार निकाली। वे मुझे अपना मददगार कहने लगे। मैं उनकी-सी फ़ुर्ती से काम करने की कोशिश ज़रूर करता, पर कर न पाता।

वे हर सुबह हमारे नाश्ते से भी पहले काम शुरू कर देते। और देर शाम को ही घर लौटते। माँ को रात का खाना देर से परोसना पड़ता।

पर मुझे यह अच्छा लगता। इसलिए क्योंकि पा खाते वक़्त बताते कि आलू दरअसल पैसा ही हैं।

''इस साल क्रिसमस पर सबके लिए तोहफ़े होंगे,'' वे हमसे कहते। ''तोहफ़े, है ना माँ? दुकानों से ख़रीदे गए तोहफ़े।''



गर्मियाँ खत्म हुईं और स्कूल फिर से शुरू हो गया। अब मैं स्कूल में दूसरी कतार में बैठने लगा था। सुबह-सुबह काफ़ी ठण्ड होती, मैं अपने हाथ जेबों में ठूंसता। जब चलता तो अपनी साँसों को हवा में अपने सामने धुंए की तरह उठते देख पाता।

अगली बार जब हम खेतों पर गए हमने पाया कि आलू के पौधे काले पड़ चुके हैं।



मैं इस कदर डर गया कि वहाँ से भाग ही जाना चाहता था। पर पा ने मुझे अपना हाथ मिट्‌टी में घुसाने को कहा। इतने अन्दर तक जब तक मुझे आलू न मिल जाएं, आलुओं के गुच्छे के गुच्छे।

"कहा था न मैंने? इस साल ढ़ेरों आलू होंगे।" उन्होंने एक आलू उखाड़ा और मुझे दिखाया। "सिर्फ़ तोहफ़े ही नहीं होंगे हमारे पास। कपड़े भी होंगे। बिलकुल नए!"

उन्होंने मेरे कंधों को और ज़ोर से भींचा। मैं तो सोच तक नहीं सकता था। मैंने कभी नए कपड़े पहने ही नहीं थे। माँ मेरे कपड़े पा के पुराने कपड़ों से सी दिया करती थी। मुझे उन्हें एहतियात से बरतने की नसीहत भी देती थी। ताकि मेरे लिए छोटे पड़ने पर मेरे भाई उन्हें पहन सकें।



मैं सोचता रहा कि आगे ना जाने क्या होगा। पता तब लगा जब पा ने आल्फे लड़कों को बुलाया। पा ने खेतों में खुदाई मशीन चलाई। इससे आलू मिट्टी के ऊपर उठ आए और मुझे दिखने लगे। पूरे खेत में अब आलू ही आलू नज़र आने लगे।

मैं आल्फे लड़कों के साथ जुट गया। हमने मिल कर आलुओं को टोकरियों में इकट्ठा किया।

आलुओं से भरी टोकरियाँ पीपों में खाली कीं। कभी तो मुझे लगता कि मेरे हाथ टूट कर गिर जाएंगे, वे इस कदर दुखते जो थे।

आख़िरकार खेत खाली हुआ। पीपों से हमारा अहाता भर गया। पा ने मुझे और मेरे भाइयों को एक-एक पीपे पर बैठाया। तब माँ के कमर के गिर्द हाथ डाला, मानो वे नाचने वाले हों।



उस रात मैंने पा को माँ से कहते सुना कि वे अगली सुबह ही कस्बे की मण्डी में जाएंगे। मैं तोहफ़ों के बारे में सोचने लगा। नए कपड़ों के बारे में भी सोचा। मैं उस सुखद अहसास पर भी सोच रहा था जो रात का खाना खाते वक़्त पूरे घर में समाई लग रही थी। मैं पा के साथ जाना चाहता था। पर माँ ने मना किया, मुझे स्कूल जो जाना था।

स्कूल के बाद मैंने अपने ज़िम्मे के सारे काम पूरे किए। तब मैं रसोई में बैठा पा का इन्तज़ार करने लगा। मैं उनके सीटी बजाते या किसी गीत को गुनगुनाते हुए लौटने की राह देख रहा था। पर मुझे सिर्फ़ घोड़ी और गाड़ी की आवाज़ सुनाई दी और तब पा दहलीज़ पर खड़े दिखे।

"लगता है इस बार सभी किसानों ने आलू ही आलू उगाए हैं। आलू बिक ही नहीं रहे हैं।" पा घोड़ी और गाड़ी को ले अगले सप्ताह भी मण्डी गए, तब उसके भी अगले सप्ताह। वे हर बार लौटते और कंधे उचकाते। मैं जब भी अहाते में जाता उन्हें आलुओं के पीपों को घूरता पाता, मानो वे उन्हें गिन रहे हों। हवा सर्द होती जा रही थी। सुबह गड्ढों में भरे पानी पर बर्फ़ की सतह जमने लगी थी।



"हमें आलू तहख़ानों में रखने होंगे," पा ने तय किया।

आल्फे लड़कों की मदद से उन्होंने बोरों को जोड़ एक ढलुवां फिसलनी बनाई। रसोई की फ़र्श पर बना तहख़ाने का दरवाज़ा खेला गया। पीपे लुढ़का कर अन्दर लाए गए और आलुओं को फिसलनी की मदद से नीचे पहुँचा दिया गया। हर जगह मिट्टी ही मिट्टी बिखर गई। माँ को यह कतई पसन्द न आया।

मैंने पीपे गिनने की कोशिश की, पर वे बहुत ही ज़्यादा थे।

"साढ़े सात सौ," पा ने कहा। "सात सौ पचास और सबसे उम्दा!"

पा ने तहख़ाने के दरवाज़े को बाहर से पुआल से ढक बन्द किया, ताकि आलू अन्दर जम न जाएं।

"मुझे जंगलों में जाना होगा," उन्होंने हमसे कहा।

किंग और बिल को पा ने गाड़ी से जोता।





पा राइली ब्रुक नाम की एक जगह काम करने चले गए। माँ ने बताया कि वहाँ पा दो दिन के सफ़र के बाद ही पहुँच पाएंगे। मुझे फिक्र होने लगी कि उन्हें बहुत ठण्ड तो नहीं लगेगी, यह भी कि उनके पास रहने के लिए कोई घर होगा कि नहीं। मैं बाहर जा उनके हल पर जा बैठा। ठीक जहाँ वे बैठा करते थे। मुझे सचमें उनकी बड़ी फिक्र हो रही थी।

माँ के पकाए बिना उन्हें भरपेट खाना मिलेगा या नहीं।

जब मैंने माँ से पूछा कि पा वहाँ क्या करेंगे, माँ ने बताया कि वे पेड़ काटेंगे। मुझे समझ ही नहीं आया कि पेड़ क्यों बिक रहे हैं, जबकि आलू नहीं।



जब पा क्रिसमस पर घर आए उनकी बड़ी-सी लाल दाढ़ी उग आई थी। वे मुझे खेतों के छोर पर ले गए और उन्होंने एक क्रिसमस ट्री काटा। वे उसे घर के अन्दर लाए ताकि मैं और मेरे भाई उसकी सजावट कर सकें।

माँ ने फज की मिठाई बनाई। रसोई में घुसने के पहले ही मुझे उसकी सौंधी महक आ रही थी। किसी ने तोहफ़ों का ज़िक्र नहीं किया। मुझे तो ख़ैर करना ही नहीं था। मैं तो उन्हें यह बताना चाह रहा था कि मैं आलुओं की देखभाल करता रहा था। सप्ताह में कम से कम एक बार मैं तहख़ाने का दरवाज़ा खोलता रहा था ताकि नीचे झांक कर देख सकूँ।



पा बोले कि मेरा यह करना बिलकुल सही था। क्रिसमस के बाद वे स्लैज से कस्बे गए। वे वहाँ बड़ी देर तक रहे। जब वे लौटे मैं लगभग सो चुका था।

"साले कमीने!" मैंने पा को लौट कर कहते सुना।

मैंने साँस थाम ली और माँ को उन्हें गालियाँ न बकने को कहते बरजते सुनने का इन्तज़ार करने लगा। पर माँ कुछ न बोली। पा ने बताया कि उन्हें फिर से जंगलों में जाना होगा।

मुझे डर था कि कहीं पा को कुछ हो न जाए। यह डर भी था कि वे कहीं मुझे भूल न जाएं। पर जाने से पहले पा मेरे पास आए। उन्होंने मेरे सस्पैन्डर्स को फटाक से खींचा, और मैंने उनके।

इस बार जब पा घर लौटे तो बर्फ़ पिघलने लगी थी। मैंने तहख़ाने का दरवाज़ा खोलना बन्द कर दिया था। वहाँ से एक अजीब सी बू जो आने लगी थी।

मैंने माँ से कहा कि शायद मुझे आलुओं की बेहतर देखभाल करनी चाहिए थी। पर वे बोलीं कि मैं और कुछ कर भी क्या सकता था। पा ने एक बार सूँघा और वे बिफर गए।

"इन्हें उठा कर ले जाने का भाड़ा तक नहीं मिल सकेगा," वे निराशा से बोले।

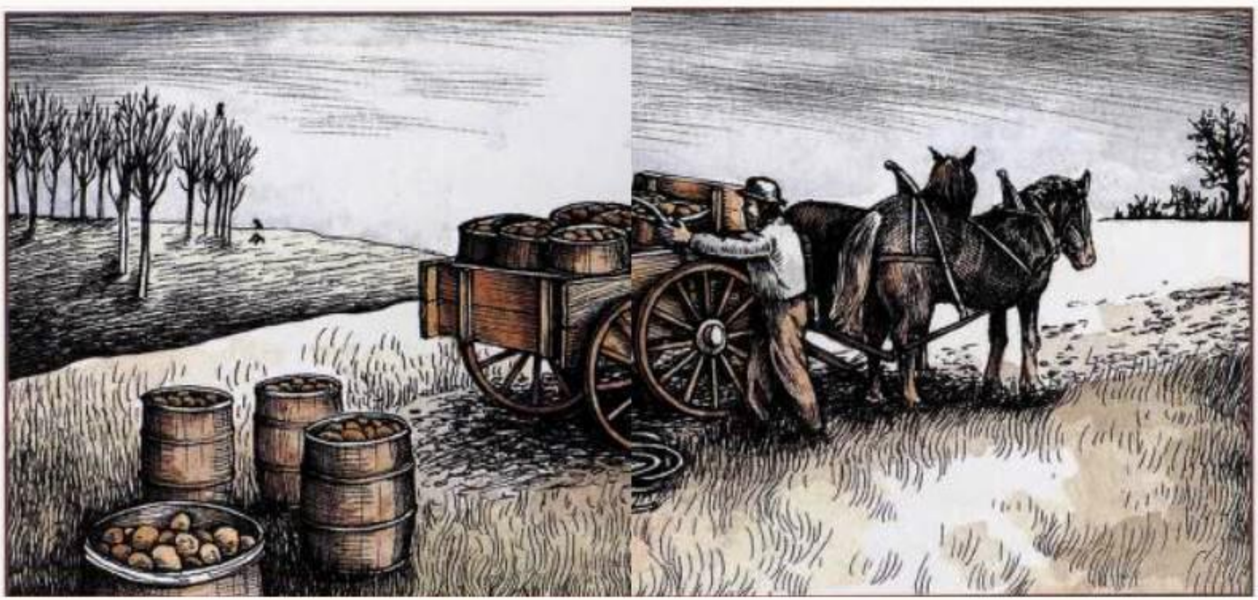
मुझे उनका मतलब समझ नहीं आया। मैं तो बस इतना जानता हूँ कि उस रात सोते वक़्त दोनों इतने धीमे-धीमे बोले कि मुझे कुछ सुनाई न दे।



अगली सुबह मैं जागा तो देखा कि पा पहले से काम में जुटे हुए थे। उन्होंने तहख़ाने का बाहरी दरवाज़ा खोल लिया था और गाड़ी में लादने के लिए एक फट्टा लगा पीपों को लुढ़का कर निकाल रहे थे। पीपे कई थे। जब मैं सो ही रहा था उन्होंने पीपों को आलुओं से भरना शुरू कर दिया था।

वे कुछ बोले नहीं। बस पीपों को भर-भर कर गाड़ी में लादते गए। जब बारह पीपे रखे जा चुके, उन्होंने मज़बूत रस्से से उन्हें बांध दिया।

मुझे लगा कि हम सड़क से कस्बे की ओर जाएंगे।





पर बड़ी सड़क पार करने के बाद हम खेत की ओर मुड़ गए। मैं उन्हें आलुओं को बोने-उगाने के बारे में कुछ कहना चाहता था, पर चुप रहा। कुछ देर में हमने रेल-पटरी पार की।

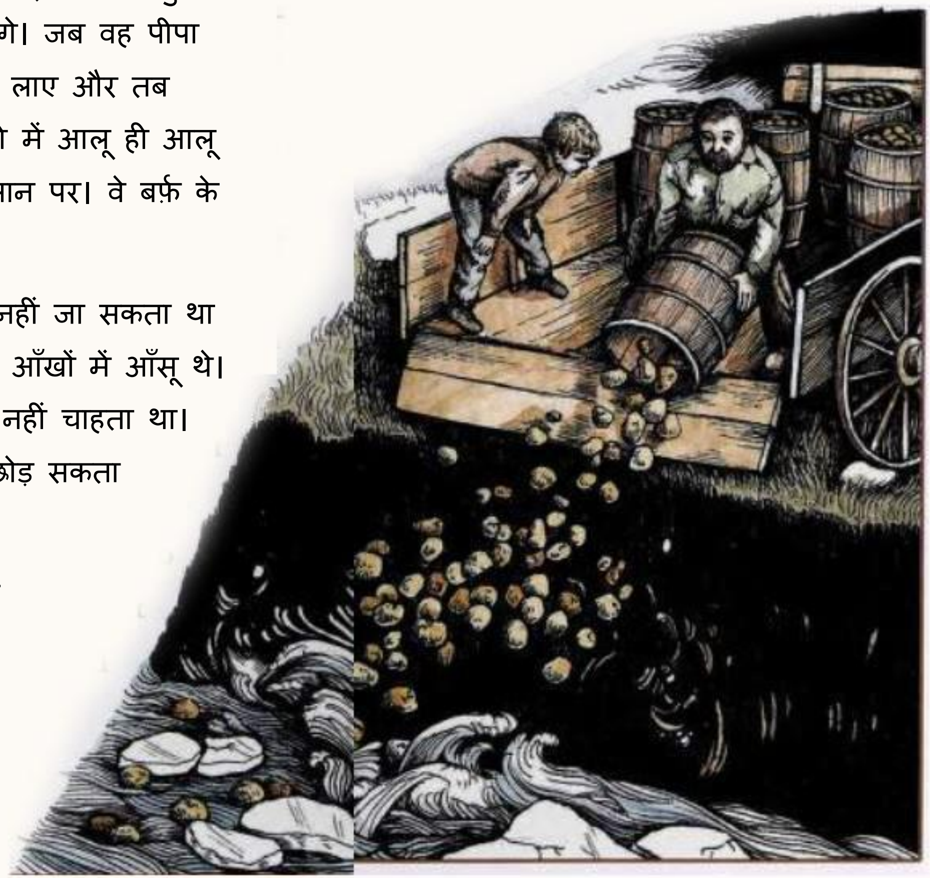
हम उस जगह पहुँचे जहाँ सेंट जॉन नदी का किनारा था। वहाँ खेलना मुझे सख़्त मना था। पा ने लगाम खींची ताकि किंग और बिल रुक जाएं।

"चलो, चलें," मुझे गाड़ी से उतार वे बोले।

मुझे उतार वे वापस गाड़ी में चढ़े। एक पीपे को लुढ़का किनारे तक लाए और तब उसे उलट दिया। सैंकड़ों आलू गड़गड़ाते हुए पानी की तरफ लुढ़कने लगे। जब वह पीपा खाली हुआ, पा दूसरा पीपा लाए और तब तीसरा। पीपे भारी थे। नदी में आलू ही आलू तिर रहे थे, उसकी पूरी ढ़लान पर। वे बर्फ़ के टुकड़ों के साथ तैर रहे थे।

“और कुछ किया ही नहीं जा सकता था उनके साथ, है ना?” पा की आँखों में आँसू थे। मैं उनकी ओर ताकना ही नहीं चाहता था। “मैं उन्हें सड़ता तो नहीं छोड़ सकता था, है ना?”

वे मेरे बिलकुल क़रीब आकर खड़े हुए।



उन्होंने मेरे कंधों को ज़ोर से भींचा। दोपहर के खाने के पहले हम दो बार गाड़ी भर-भर कर वहीं लौटे। मैं तब भी उनके साथ था जब उन्होंने आख़िरी पीपे को पानी में उलटा था।

"तो ये थे ताहफ़े?" वे बोले।





तोहफ़े बेशक आए। पर बाद में। पर वे मायने नहीं रखते थे। जो सचमें मायने रखता था वह था मेरे कंधों का भींचा जाना। परिवार का कठिन दौर और भी मुश्किल होता गया। पर पा हमारे साथ हों या नहीं - मैं उन्हें मेरे कंधों को भींचते, मेरी हिम्मत बंधवाते, महसूस करता था।

लगता है कंधों को भींचना भी पा की ही बोई एक और चीज़ थी। और यह फ़सल आलुओं से भी बेहतर उग सकी। मैं अब पूरी तरह बड़ा हो गया हूँ, पर अब तक भी उन्हें महसूस करता हूँ।